ROHTAS MAHILA College SASARM
Department OF- History - Subsidiary
4-05-2020 · B.A I (2019-20)
Dr. Satyajeet Sarang (Notes)

★ ऋग्वैदिक भौगोलिक विस्तार क्षेत्र

प्राचीन आर्य लोग सप्त - सिंधु नाम के क्षेत्र मे रहते थे जिसका अर्थ 7 नदियों वाला क्षेत्र है। यह क्षेत्र मुख्यतया दक्षिण रुशिया के उत्तर - पश्चिम क्षेत्र से लेकर यमुना नदी तक के क्षेत्र में फैला है। 7 नदियों में 1. सिंधु 2. वितस्ता (झेलम) 3. असिकनी (चिनाब) 4. परुष्णी (रावी) 5. विपाशा (व्यास) 6 शुतुद्री (सतलज) 7. सरस्वती (घाग्घर) शामिल हैं।

★ परंपरानुसार आर्यों के 5 कबीले (जन) थे, जिनका समुदाय पंचजन, पंचजन कहलाता था, लेकिन और भी जन रहे होंगे। जन आपस में लड़ते थे और कभी-कभी इसके लिए अनार्यों जनों का भी सहारा लेते थे। भरत और तित्सु आर्यों के शासक वंश थे, और पुरोहित वशिष्ठ दोनों वंशों के समर्थक थे। बाद में चलकर इस देश का नाम इसी भरत कुल के आधार पर भारतवर्ष पड़ा। इस कुल कबीले का उल्लेख सबसे पहले ऋग्वेद में मिलता है।

उत्तरवैदिक काल

भारतीय इतिहास में उस काल को जिसमें सामवेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों आरण्यकों एवं उपनिषदों की रचना हुई, को उत्तर वैदिक काल कहा जाता है।

★ उत्तर वैदिक काल के अंतिम दौर में 600 ई० पू० के आस पास आर्य लोग कोशल, विदेह एवं अंग राज्य से परिचित थे।

इस संस्कृति का मुख्य केन्द्र मध्य देश था।

अथर्ववेद में मगध के लोगों को व्रात्य कहा गया है।

★ राजनीतिक व्यवस्था

उत्तरवैदिककाल में कबीले पर शासन करने वाला राजा अब उस प्रदेश शासन करने लगा।

उपनिषद् काल में अनेक राजा ऐसे हुए, जो ब्रह्म ज्ञान तथा आध्यात्म चिंतन से जुड़े थे। जिनमें प्रमुख थे — विदेह के जनक, कैकय के अश्वपति, काशी के अजात शत्रु और पांचाल के प्रवाहण जाबालि।

★ राष्ट्र शब्द जो प्रदेश का सूचक है पहली बार इस काल में प्रकट हुआ। आरम्भ में पांचाल एक कबीले का नाम था परन्तु बाद में वह प्रदेश का नाम हो गया।

* अथर्ववेद के अनुसार राजा को आय 16 वाँ भाग था ।
* ऋग्वैदिक काल में बलि एक स्वेच्छाकारी कर था जबकि उत्तरवैदिक काल में यह एक नियमित कर हो गया ।

सामाजिक संगठन

उत्तर वैदिक काल का समाज चार वर्णों में विभक्त था — ब्राह्मण, राजन्य या क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । इस काल में यज्ञ का अनुष्ठान अत्यधिक बढ़ गया था जिससे ब्राह्मणों की शक्ति में अपार वृद्धि हुई ।

इस काल में वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म पर आधारित न होकर जाति पर आधारित हो गया था । तथा वर्गों में कठोरता आने लगी थी । समाज में अनेक धार्मिक श्रेणियों का उदय हुआ जो कठोर होकर विभिन्न जातियों में बदलने लगीं व्यवसाय आनुवंशिक होने लगे ।

उत्तर वैदिक काल में केवल वैश्य ही कर चुकाते थे । ब्राह्मण एवं क्षत्रिय दोनो वैश्यों से वसूले राजस्व पर ही जीते थे ।

* उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों का पैतृक सम्पति से अधिकार छिन गया । इसकाल में स्त्रियों का सभा में प्रवेश वर्जित था ।

आर्थिक जीवन

कृषि इस काल में आर्यों का मुख्य व्यवसाय था शतपथ ब्राह्मण में कृषि की चारों क्रियाओं— जुताई बुआई कटाई तथा मड़ाई का उल्लेख हुआ है।

★ काठक संहिता में 24 बैलों द्वारा खींचे जाने वाले हलों का उल्लेख मिलता है।

व्रीहि (धान) यव (जौ) माष (उड़द), (मूंग), गोधूम (गेहूं) आदि अनाजों का वर्णन मनुर्वेद में मिलता है।

ऋग्वैदिक लोग जौ (यव) बोया करते थे, परन्तु इस काल में उनकी मुख्य फसल धान और गेहूं हो गयी। वैदिक काल के लोगों ने जिन धातुओं का प्रयोग किया उनमें ताँबा पहला रहा होगा। ताँबे की वस्तुएँ चित्रित धूसर मृदभाण्ड स्थलों में पाई गई है।

धार्मिक जीवन

उत्तर वैदिक काल में उत्तरी दो आब ब्राह्मणों के प्रभाव में आर्य संस्कृति का केन्द्र स्थल बन गया।

★ ऋग्वैदिक काल के दो प्रमुख देवता इन्द्र और अग्नि का अब पहले जैसा महत्व नहीं रहा। पशुओं के देवता रुद्र इस काल में एक महत्वपूर्ण देवता बन गये।